संपादक के नाम पत्र

कुमार राकेश नई दिल्ली

भारत और अमेरिका के रिश्तों पर आधारित लेखों से यह जानकारी मिली कि दोनों देशों के रिश्ते कितने पुराने हैं। अमेरिकी के पहले राष्ट्रीय उद्यान येलोस्टोन के बारे में जानकारी भी उपयोगी लगी, विशेषकर लेखक की साहसिक यात्रा के लिए। प्रॉम डांस के बारे में जानकारी भी रोचक रही। इससे यह पता लगा कि किस तरह अमेरिका में जो छात्र पार्टी के लिए खास पोशाक नहीं खरीद सकते, उनकी मदद कुछ खास संगठन करते हैं।

संजय कुमार सिन्हा पटना

मानव तस्करी के बारे में प्रकाशित लेख अच्छा लगा। मानव तस्करी को एक जघन्य अपराध की श्रेणी में रखना चाहिए। इस संबंध में अमेरिकी विदेश मंत्री कोंडोलीजा राइस का बयान और दिए गए आंकड़े बहुत ही उपयोगी हैं। ये लोगों को जागरूक बनाएंगे। मानव तस्करी को अब और ज़्यादा सहन नहीं किया जाना चाहिए।

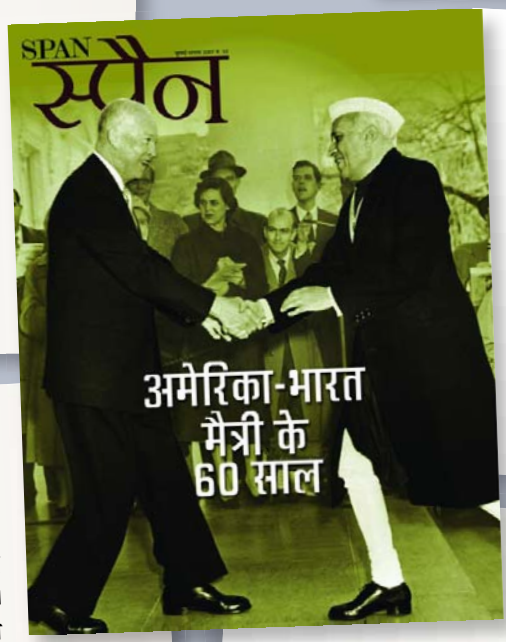

अरुण कुमार झा पटना

के. शंकर वाजपेयी द्वारा लिखित ''भारत-अमेरिका संबंध'' और स्टैनली वोल्पर्ट द्वारा लिखित ''भारत-अमेरिकी मैत्री की जड़ें'' मुझे सर्वाधिक पसंद आए। इन दोनों लेखों के पढ़ने से बहुत-सी नई जानकारियां हासिल हुईं। यह भी जानकर आश्चर्य हुआ कि चर्चिल गांधीजी को एक ''अभागा बूढ़ा'' समझते थे। राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के मन में भारत के प्रति कितना सम्मान था, यह जानकर भी बहुत सुखद अनुभव हुआ।

संतोष शर्मा नई दिल्ली

वैसे तो स्पैन में प्रकाशित सभी लेख सशक्त हैं पर आशा श्रीनिवासन पर प्रकाशित लेख ''संगीत में संस्कृतियों का मिलाप'' बेहद पसंद आया। संगीत की कोई सरहद नहीं होती। आशा श्रीनिवासन ने कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के शुभपन्तुवरली की लय पर जर्मन लेखक हर्मन हैस की विख्यात कृति ''सिद्धार्थ'' की अंतरात्मा महसूस कर ''बाय द रिवर'' की रचना कर डाली। यह चमत्कार नहीं, उनके अंदर मौजूद सौहार्द की मिसाल है।

रंजन गुप्ता गुड़गांव

आपने भारत-अमेरिकी मित्रता के 60 साल के मौके पर कई अमेरिकी राजदूतों के चित्र प्रकाशित किए लेकिन राजदूत रिचर्ड सेलेस्ते का नहीं। मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। सेलेस्ते और उनकी पत्नी जैक्लीन बहुत ही लोकप्रिय थे। उनकी मित्रता अपने सरकारी कामकाज के दायरे से ज़्यादा व्यापक थी। यह एक अच्छे राजनयिक होने का परिचायक है।

सतीश गुप्ता भोपाल

सेबास्तियन जॉन के लेख की दूसरी किस्त ''एक भारतीय ने देखे बस से अमेरिका के रंग'' पढ़ी। इस लेख ने हमें अमेरिका को नए नजरिये से देखने का अवसर प्रदान किया है। पहली बार अमेरिका की सैर करने वाले लोगों के लिए यह लेख बहुत ही उपयोगी है। लेख की खास बात यह है कि एक भारतीय की निगाह से देखने के बावजूद इसमें अमेरिकी गहराई के दर्शन होते हैं। एक भारतीय अमेरिका को इस नजरिये से देखे और अमेरिका के लोग भारत में इसी तरह सकारात्क दृष्टि के साथ आएं तो निश्चित ही दोनों देशों में और निकटता आएगी।

एक भारतीय ने बस से देखे
अमेरिका के रंग

शाश्वत तिवारी लखनऊ

''इस्लामिक सेंटर में राष्ट्रपति बुश के उद्गार'' पढ़कर मन बहुत प्रसन्न हुआ। इससे उनकी संवेदनशीलता का पता चला। उनके भाषण से उनकी अहिंसावादी प्रगतिशील सोच और दूरदर्शिता का पता चलता है। ''भारत-अमेरिकी मैत्री की जड़ें'' लेख भी बेहतरीन था। लेख के साथ इस्तेमाल किए गए श्वेत-श्याम चित्रों ने इतिहास के महत्वपूर्ण पलों को फिर से जिंदा कर दिया।

ब्रजेंद्र कुमार सिंह कोडरमा

अमेरिकी छात्रा क्रिस्टीन कार्वास्की द्वारा लिखा गया ज्ञानवर्द्धक लेख ''संकट में सपेरे'' बहुत अच्छा लगा। लेखिका ने बड़े ही कलात्मक ढंग से भारतीय हुनर एवं करतब का वर्णन किया है। उन्होंने इस समुदाय पर आ रहे संकट को दूर करने के उपाय पर भी जोर दिया है जो प्रशंसनीय है।

पाठकों की राय